चित्रकला का विकास (Fresco Painting)

↓

आरंभिक रूप स्तम्भकला

↓

भीमबेटका का गुफा चित्र

↓

बौद्ध पंथ

बाघ चित्रकला

अजन्ता के चित्र

सातवाहन, वाकाटक, गुप्त, चालुक्य
(द्वितीय ई.पू. से 7वीं सदी तक)
30 गुफाएँ - 16, 17, 19 की गुफाएँ

↓

ब्राह्मण, बौद्ध, जैन पंथ

बादामी चित्रकला

चालुक्य वंश (7वीं-8वीं सदी)

↓

एलोरा के गुफा चित्र

34 गुफाएँ - राष्ट्रकूट वंश - 10वीं सदी

↓

10वीं सदी के पश्चात् गुफा चित्रकला अथवा स्तम्भ चित्रकला का पतन एवं लघु चित्रकारी (Miniature painting) का विकास।

↓

जैन चित्रकला (गुजरात एवं राजस्थान)

↓

पट्ट चित्रकला (कपड़े पर चित्रकारी)
(उत्तर प्रदेश, नेपाल, तिब्बत)

↓

प्रकृति के चित्र पर बल → **गुजराती शैली** (14वीं-15वीं सदी)
कागज का प्रचलन

↓

चौरपंचशिका शैली (एक ही साथ कथा एवं चित्र)

↓

पोथी शैली

ललितकलाओं की विविध शैलियों में चित्रकला एक महत्वपूर्ण शैली का प्रतिनिधित्व करती है। आदिमानव ने भी सर्वप्रथम अपने आप को चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया था। जब मानव ने अपने आस-पास के परिवेश के साथ साहचर्य स्थापित किया तथा उन्होंने जो महसूस किया, तो उसे सर्वप्रथम चित्रों के माध्यम से ही व्यक्त करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, उच्च पुरापाषाण काल एवं मध्यपाषाण काल के मानव ने अपने मनोभाव को भीमबेटका के गुफा चित्रों के रूप में व्यक्त किया।

चित्रकला के विकास में सातवाहन शासकों का विशेष योगदान रहा था। बताया जाता है कि अजन्ता के आरम्भिक गुफा चित्र सातवाहन शासकों से जुड़े रहे थे। उदाहरण के लिए, गुफा संख्या 9 एवं 10 आरम्भिक गुफाओं से संबंधित हैं तथा इन गुफाओं का विकास सातवाहन शासकों के द्वारा किया गया था। ऐसा माना जाता है कि सातवाहनों के अधीन भज तथा अमरावती से जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, उन्हीं की अभिव्यक्ति सातवाहनकालीन चित्रकला में भी हुई है।

इस काल में कुषाणों के द्वारा भी चित्रकला के विकास में अपना योगदान दिया गया। वस्तुतः उत्तर-पश्चिम में चित्रकला की जो शैली विकसित हुई थी, उस पर यूनानी, रोमन तथा ईरानी शैली का प्रभाव था। फिर इसमें कुषाणों ने चीनी तत्वों को भी शामिल कर दिया। इस प्रकार, उत्तर पश्चिम में कुषाणों के अधीन चित्रकला की एक मिश्रित शैली विकसित हुई। उदाहरण के लिए, उत्तर-पश्चिम से महात्मा बुद्ध का एक ऐसा चित्र मिलता है जिनके वक्ष पर 'श्रीवत्स' अंकित है। उसी प्रकार, एक कुषाणकालीन चित्र में एक महिला को सरोवर से निकलते हुए दिखाया गया है जिसके साथ एक शिशु भी है।

■ अजन्ता के गुफा चित्र

अजन्ता के गुफा चित्र प्राचीनकालीन भारतीय चित्रकला की महान धरोहर हैं। इसके विकास में विभिन्न राजवंशों का योगदान रहा है। यथा- सतावाहन वंश, वाकाटक वंश, गुप्त वंश तथा चालुक्य वंश। अजन्ता में कुल 30 गुफाओं का निर्माण किया गया, इनमें 29 गुफाएँ पूर्ण निर्मित हैं, वहीं एक गुफा अर्द्धनिर्मित। गुफा संख्या 9 और 10 सातवाहन काल से संबद्ध हैं, जबकि गुफा संख्या 16, 17, 19 गुप्तकाल से।

गुफा संख्या 16 में कुछ अनुपम चित्र बनाए गये हैं, इनमें एक महत्वपूर्ण चित्र है मरणासन्न राजकुमारी की। इसमें एक राजकुमारी अपने पति की विरह में मर रही है, जबकि उसके परिजन चारों ओर से उसे घेरकर खड़े हैं। इस चित्र में मानव करूणा का अद्वितीय चित्रण हुआ है। गुफा संख्या 17 को 'चित्रशाला' का नाम दिया जाता है क्योंकि इसमें अनेक सुंदर चित्र उकेरे गये हैं। एक अद्भुत चित्र बुद्ध एवं उनकी पत्नी यशोधरा के संबंधों को व्यक्त कर रहा है। यशोधरा के द्वारा अपने पुत्र राहुल को महात्मा बुद्ध को अर्पित करते हुए दिखाया गया है। यहाँ भी मानव संवदेना का बड़ा ही सजीव चित्रण मिलता है।

अजन्ता के चित्रों पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। इन चित्रों में महात्मा बुद्ध तथा बोधिसत्वों को अभिव्यक्त किया गया है। वस्तुतः अजन्ता चित्रकला क्लासिकल मानदंड ग्रहण कर लेती है तथा यह आने वाले युगों में भारतीय चित्रकला पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

■ **बाघ चित्रकला**

बाघ चित्रकला से संबंधित गुफाएँ ग्वालियर के पास स्थित हैं। यहाँ से गुप्तकाल के अनेक महत्वपूर्ण चित्र प्राप्त हुए हैं। वैसे तो बाघ में 9 गुफाएं मिली हैं, किंतु गुफा संख्या 2, 4 और 5 अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। अगर हम बाघ चित्रकला की तुलना अजन्ता चित्रकला से करते हैं, तो पाते हैं कि जहाँ अजन्ता चित्रकला का विषय धार्मिक था, वहीं बाघ चित्रकला का विषय लौकिक। उसी प्रकार, जहाँ अजन्ता चित्रकला विशेषकर अभिजात्य वर्ग से संबंधित थी, तो बाघ चित्रकला सभी वर्गों से।

■ **बादामी चित्रकला**

बादामी चित्रकला का विकास चालुक्य शासकों के अधीन हुआ था। चालुक्य शासक मंगलेश ने कई गुफाओं का निर्माण कराया तथा उन गुफाओं में मूर्तियों के साथ-साथ चित्र भी बनाये गये। इन गुफाओं में संख्या-4 अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें विष्णु के विभिन्न रूपों के चित्र अंकित किए गए हैं।

■ **एलोरा और एलिफेंटा की चित्रकारी**

एलोरा महाराष्ट्र में स्थित है तथा एलोरा से मूर्तिकला के साथ चित्रकला के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। एलोरा में चित्रकला के विकास में चालुक्य तथा राष्ट्रकूट शासकों का विशेष योगदान रहा है। यहाँ से प्राप्त कुछ चित्रों में कैलाशनाथ, इन्द्रसभा तथा कुछ अन्य चित्रकारी महत्वपूर्ण है। महाराष्ट्र में एलिफेंटा मुम्बई के पास स्थित है। इसे पहले 'धारानगरी' के नाम से जाना जाता था, किंतु आगे पुर्तगीजों ने हाथियों के आकार की बड़ी-बड़ी चट्टानों को देखकर इसका नामकरण एलिफेंटा रख दिया। एलिफेंटा से मूर्तिकला का भी साक्ष्य मिलता है, किंतु इसके साथ-साथ यहाँ से चित्रकला के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, अर्द्धनारीश्वर के रूप में शिव, पुरूष तथा प्रकृति (जीव तथा शरीर) का मिलन आदि।

■ **पल्लव कालीन चित्रकला**

पल्लवों के अधीन चित्रकला की एक शैली विकसित की गई, इस पर अजन्ता चित्रकारी का प्रभाव भी देखा जा सकता है। आगे पल्लव चित्रकला चोलकला के रूप में विकसित हुई। पल्लव शासकों में महेन्द्रवर्मन प्रथम ने कुछ गुफाओं का निर्माण कराया तथा चित्रकारी को भी प्रोत्साहन दिया। आगे महेन्द्रवर्मन की परम्परा को नरसिंहवर्मन द्वितीय अथवा राजसिंह ने आगे बढ़ाया। उसने कैलाशनाथ मंदिर की दीवारों पर चित्रों का निर्माण कराया। इनमें विभिन्न देवताओं का प्रतिनिधित्व मिलता है। ये चित्र पल्लव चित्रकला के ज्वलंत उदाहरण हैं।

■ **चोलकालीन चित्रकला**

इस काल में पल्लव कालीन चित्रकला और भी विकसित होकर आई थी। इस काल के चित्र मंदिरों की दीवारों पर मिलते हैं। आरम्भिक मंदिरों में नर्तमलाई में विजयालय चोलेश्वर मंदिर महत्वपूर्ण हैं। इसकी दीवारों पर विभिन्न देवी देवताओं के चित्र बनाये गये, किंतु सबसे महत्वपूर्ण चित्र तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर की दीवारों पर अंकित है, जो राजराज प्रथम के काल में निर्मित किये गये थे। ये चित्र आंतरिक गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ की दीवारों पर बनाये गये हैं। ये चित्र ढक गये थे क्योंकि इनके ऊपर नायक के काल की चित्रकारी प्राप्त होती है। किंतु गोविन्द स्वामी नामक महत्वपूर्ण विद्वान (विशेषज्ञ) ने इन चित्रों को खोज निकाला। इन चित्रों में नटराज शिव का चित्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ-साथ त्रिपुरांतक (तीन किलों को नष्ट करने वाले) के रूप में शिव का चित्र अंकित किया गया है।

■ **चित्रकला के विकास का दूसरा चरण (लघु चित्रकला)**

आरम्भिक चित्र तालपत्र पर बनाए गए, उसके बाद कागज एवं वस्त्रों पर लघु चित्र बनाए जाने लगे। ऐसा माना जाता है कि एलोरा गुफा चित्रकला के पश्चात् स्तम्भ चित्रकारी का पतन हो गया और उसकी जगह लघु चित्रकला आरम्भ हुई। इसका आरम्भिक विकास तालपत्र पर देखा गया। इसके विकास में जैनियों का योगदान रहा है। गुजरात और बंगाल इस चित्रकला के प्रमुख केन्द्र थे। गुजरात जैनियों का केन्द्र था। **जैन चित्रकला** का विकास 7वीं सदी से आरम्भ हुआ।

■ **जैन चित्रकला**- 9वीं से 12वीं शताब्दी तक सम्पूर्ण भारत को प्रभावित करने वाली शैलियों में जैन शैली का प्रमुख स्थान है। इस शैली का प्रथम प्रमाण सित्तनवासल की गुफा में बनी पाँच जैन मूर्तियों से प्राप्त होता है। भारतीय चित्रकलाओं में कागज पर की गई चित्रकारी का उत्कृष्ट स्थान है। इस कला का नमूना जैन ग्रंथों के ऊपर लगी दफ्तियों या लकड़ी की पटरियों पर भी मिलता है। इस शैली पर मुगल और ईरानी शैली का भी प्रभाव है।

■ **पट्ट चित्रकला**

चित्रकला की यह शैली बंगाल में विकसित हुई, किंतु इसका प्रसार उत्तर प्रदेश, नेपाल, तिब्बत आदि क्षेत्रों में भी देखा गया। इस चित्रकारी से जुड़े हुए महत्वपूर्ण कलाकार नीलमणि दास, गोपालदास, बलरामदास आदि थे। इस शैली के अंतर्गत रामायण, महाभारत तथा पुराणों से संबंधित कथाओं को कपड़ों पर अंकित किया जाता था, इसलिए इसका नाम पट्ट चित्रकला पड़ गया।

■ **गुजराती चित्रकला**

यह चित्रकला इस रूप में विलक्षण थी कि इसमें स्तम्भ चित्रकारी की जगह तालपत्रों पर चित्र बनाये जाने लगे। ये चित्र पुस्तकों के रूप में बनाये जाते थे, अत: इसे 'पोथी' शैली का नाम दिया गया। गुजराती चित्रकला में प्रकृति के चित्रण पर भी बल दिया गया था। उदाहरण के लिए, अग्नि, जल, बादल, आकाश आदि के चित्र निर्मित किये गये तथा इन्हें तालपत्रों पर उकेरा गया। आगे इसका प्रभाव चित्रकला की राजपूत शैली पर देखा जा सकता है।

■ **पाल शैली:** 9वीं से 12वीं शताब्दी तक बंगाल में पालवंश के शासकों-धर्मपाल और देवपाल के शासन काल में विशेष रूप से विकसित होने वाली पाल शैली की चित्रकला की विषयवस्तु बौद्ध धर्म से प्रभावित रही है। प्रारंभ में ताड़-पत्र और बाद में कागज पर बनाये जाने वाले चित्रों में वज्रयान बौद्ध धर्म के दृश्य चित्रित हैं। दृष्टांत शैली की प्रधानता वाली इस शैली ने तिब्बत और नेपाल की चित्रकला को भी प्रभावित किया है। इसका प्रमुख केन्द्र पूर्वोत्तर भारत ही रहा, परन्तु वर्तमान में इस शैली के चित्र देश के विभिन्न भागों में स्थित संग्रहालयों में भी देखे जा सकते हैं।

प्रश्न- कला के क्षेत्र में बौद्धों के योगदान का निरूपण कीजिए।

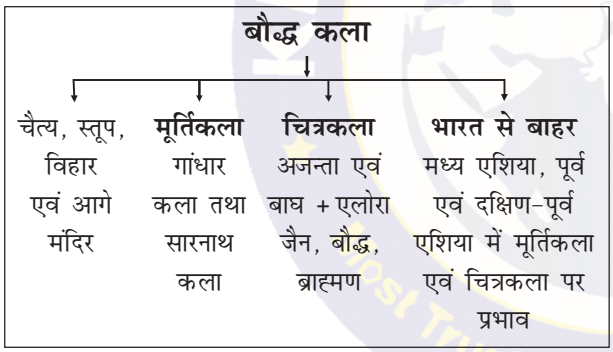

प्रश्न- अजन्ता भारतीय संस्कृति की महान धरोहर है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

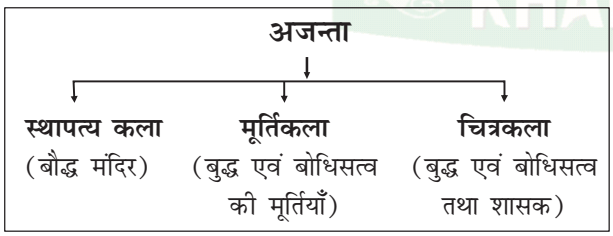

अजन्ता भारतीय कला के विकास में एक महत्वपूर्ण विभाजक रेखा बनकर आता है। अजन्ता के काल तक भारत की कई कला शैलियां इतनी प्रौढ़ हो गईं कि इन्होनें न केवल परवर्ती काल की भारतीय कला पर, वरन् भारत के बाहर भी कला शैलियों पर अपना प्रभाव छोड़ा।

अजन्ता न केवल चित्रकला, बल्कि स्थापत्य एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में भी भारत की महान कलात्मक उपलब्धि है। यह दूसरी सदी ईसा पूर्व तथा 7वीं सदी के बीच लगभग एक हजार वर्षों के विकास के इतिहास को दर्शाता है। अजन्ता में 30 गुफाओं का अवशेष मिलता है। इनमें कुछ चैत्य हैं एवं कुछ विहार। पहली बार अजन्ता में चैत्य एवं विहार दोनों साथ-साथ निर्मित दिखाई पड़ते हैं। चैत्य बौद्ध गुफा मंदिर है, गुप्तकालीन गुफा मंदिर चैत्य गुफा मंदिर का उत्कृष्टतम उदाहरण है।

मूर्तिकला के क्षेत्र में भी अजन्ता का योगदान रहा है। यहाँ बुद्ध एवं बोधिसत्वों की अनेक मूर्तियाँ मिलती हैं जो दर्शाती हैं कि अजन्ता की मूल उत्प्रेरणा बौद्ध पंथ से मिली थी। गुप्तकालीन मूर्तिकला, सारनाथ कला के निकट है।

सबसे बढ़कर चित्रकला के क्षेत्र में अजन्ता विकास की चरम अवस्था को दर्शाता है। अजन्ता की गुफा संख्या-16, 17 एवं 19 जो गुप्त काल से सम्बद्ध हैं, चित्रकला के क्षेत्र में क्लासिकल मानदण्ड को प्रदर्शित करती हैं। अजन्ता कला को विभिन्न राजवंशों का संरक्षण मिला; यथा-शुंग वंश, कुषाण वंश, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य वंश आदि। फिर भी अजन्ता की कला केवल राजकीय दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति नहीं है। इसके विकास में जनसामान्य की भी अहम भूमिका रही है। साधु, संन्यासी, तपस्वी, स्वतंत्र कलाकार सभी ने इसमें अपना योगदान दिया। इसलिए अजन्ता के चित्रों में विविधता है। इसमें ग्रामीण जीवन से लेकर नगरीय जीवन, सभी की अभिव्यक्ति है। भारतीय कला के इतिहास में इसका महत्व इस बात में भी निहित है कि इसने पूर्वी एशिया की कला पर भी अपनी छाप छोड़ी।

प्रश्न- एलोरा न केवल भारतीय संस्कृति की महान धरोहर है, बल्कि यह धार्मिक समन्वय का भी एक अनुपम उदाहरण है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

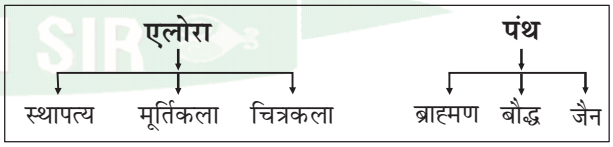

एलोरा के अध्ययन के बिना भारतीय कला का इतिहास अधूरा रह जाएगा। यह अजन्ता से लगभग 50 किमी. दूर स्थित है और यहाँ से 34 गुफाएँ मिली हैं। इन गुफाओं की विलक्षणता इस बात में है कि ये गुफायें ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन तीनों धार्मिक पंथों से सम्बद्ध हैं। भारत में ऐसे बहुत कम केन्द्र हैं जहाँ धार्मिक समरसता का ऐसा बेहतरीन उदाहरण मिलता है। मथुरा के बाद एलोरा ऐसा ही एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।

एलोरा, कला की भिन्न शैलियों के विकास को दर्शाता है। पहली शैली है- स्थापत्य कला। एलोरा में निर्मित गुफाएँ स्थापत्य कला के विकास का प्रमाण हैं। यह गुफा वास्तुकला का विकसित रूप है जिसका आरम्भिक साक्ष्य हमें अशोककालीन गुफा के रूप में देखने को मिलता है।

एलोरा से मूर्तिकला और चित्रकला, दोनों के साक्ष्य भी मिलते हैं। यहाँ से ब्राह्मण देवता, बुद्ध एवं तीर्थंकर सभी की मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। इन मूर्तियों पर सारनाथ कला का प्रभाव देखा जा सकता है।

एलोरा की चित्रकला पर अजन्ता के चित्रकला का प्रभाव देखा जा सकता है, परन्तु एलोरा के चित्रों में भावों की वह गहराई नहीं है, जो हम अजन्ता में पाते हैं।

एलोरा की कलाकृतियों का अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि विभिन्न धार्मिक पंथों के द्वारा जो मूर्तिकला एवं चित्रकला विकसित की गई है उसमें अभिव्यक्ति की समानता है। भले ही धार्मिक विश्वास अलग-अलग हों, परन्तु कला संबंधी दृष्टि एक है। इसलिए एलोरा, 'विविधता में एकता' का ज्वलंत उदाहरण बन जाता है।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR